हे भत सभ हुकमें केई, रांद डेखारी खिलवत में घर।
गाल्यूं खिलवत ज्यूं केयूं रांदमें, जो हक दिल गुझांदर।। १५ ।।

यह सब कारीगरी हुकम की है। घर में मूल-मिलावा में बिठाकर खेल दिखलाया। परमधाम की बातें तथा श्री राजजी के दिल की गुझ (गुह्य) बातें भी खेल में बताईं।

गाल्यूं सभे रांद ज्यूं, थींद्यूं मय खिलवत।
थींदा खिलवत में सुख खेलजा, गिडां खेलमें सुख निसबत।। १६ ।।

अब खेल की सब बातें मूल-मिलावा में होंगी और खेल के सुख मूल-मिलावा में मिलेंगे। जिस तरह से परमधाम के सुख खेल में लिए हैं, वैसे ही खेल के सुख मूल-मिलावा में मिलेंगे।

असां न छड्यो अर्स के, रांदमें पण आयूं।
थेयो विछोडो अर्समें, रांदमें पण न आयूं।। १७ ।।

हमने परमधाम नहीं छोड़ा और खेल में भी आये। परमधाम से वियोग भी हुआ और खेल में आये भी नहीं।

हे भत्यूं सभ हुकमें, परी परी कारे।
कारण वाद इस्क जे, डिंनाऊं बए हंद डिखारे।। १८ ।।

यह सब हिकमत हुकम की है, जो तरह-तरह से काम करता है। इश्क रब्द के कारण ही हमें दोनों ठिकाने दिखलाए।

पातसाही पांहिजी, डिखारी भली पर।
कीं चुआं वडाई हकजी, मूं धणी वडो कादर।। १९ ।।

श्री राजजी महाराज ने अपनी साहेबी अच्छी तरह से दिखलाई। श्री राजजी महाराज की बड़ाई कैसे कहूं? मेरे धनी सब प्रकार से समर्थ हैं।

महामत चोए हे मोमिनों, पांण के बिहारे तरे कदम।
खिल्ल कंदा वडी अर्समें, जा केई हुकम इलम।। २० ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! अपने को चरणों के तले बिठाकर हुकम और इलम ने परमधाम में हमारी बड़ी हंसी उड़ाई।

।। प्रकरण ।। १२ ।। चौपाई ।। ५१३ ।।

हक हादी रूहोंजी सिफत

कांध रूह भाईयां सिफत करियां, तोहिजी हित थिए न सिफत किएं केई।
से न्हारयम जडे बेवरो करे, आंऊं उरझी ते में रही।। १ ।।

हे मेरे प्रीतम! मेरी रूह चाहती है कि मैं आपकी सिफत करूं। आपकी सिफत यहां कोई नहीं कर सकता। जब मैं विचार करके देखती हूं तो स्वयं इसमें उलझ जाती हूं।

हे दिलजी गाल के से करियां, रुहजी तूं जांणे।
कुछण भेणी लाथिए, कांध चओ से चुआं हांणे।। २ ।।

यह दिल की बातें किससे कहूं? मेरी रूह की आप सब जानते हो। कहने के लिए अब कुछ बाकी रहा ही नहीं। हे धनी अब जैसा कहो वैसा करें।

Nijanand App

उताइयां आलम में, मूं जेडी केई न कांए।
अजां तरसे मूं जिंदुओ, हे केही पर तोहिजी आए।। ३ ।।

आपने रूहों को खेल में उतारा। मेरे जैसी बड़ाई और किसी को नहीं दी। फिर भी मेरा जीव तरसता है। यह आपका कौन-सा नियम है?

पांण जेड्यूं डिंने दातडयूं, से डिठ्यूं मूं नजर।
अजां मंगाइए मूं हथां, मूं कांध एहडो कादर।। ४ ।।

आपने जो उदारता दिखाई है, मेहर की है, वह मैंने नजर से देखी (मन में विचारा)। आप सब तरह से समर्थ हैं, फिर भी मेरे से मंगवाते हो?

जे वड्यूं केइए हिन रांदमें, तिंनी ज्यूं केई कोडी सिफतूं कन।
से वडा मंगन खाक पेरनजी, असां अर्स रूहन।। ५ ।।

संसार में आपने जिसको बड़ा (त्रिदेव) बनाया है, उनकी लोग करोड़ों तारीफें करते हैं। गुणगान गाते हैं। यही त्रिदेव हम रूहों के चरणों की धूलि मांगते हैं।

सिरदार ते रूहन में, मूंके केइए कांध।
वडी वडाई डिनिएं, अची मय हिन रांद।। ६ ।।

ऐसी रूहों के बीच में, हे धनी! आपने मुझे सिरदार बनाया। खेल में आकर हमें बड़ी बुजरकी (बड़प्पन) दी।

हे जे वड्यूं केइए हिन आलममें, हिनज्यूं सिफतूं तिंनी न पुजन।
से वडा वड्यूं सिफतूं करीन, पुजे न खाक मोमिन।। ७ ।।

इस संसार में आपने जिनको बड़ा बनाया है, इनकी कुल सिफत मोमिनों की चरण धूलि की सिफत के समान नहीं है। यह संसार के त्रिदेव मोमिनों की सदा महिमा गाते हैं।

ते में वडी मूंके केइए, मूंजी सिफत न थिए मय रांद।
जे ए सिफत न पुजे, त सिफत तोहिजी करियां कीं कांध।। ८ ।।

इन मोमिनों के बीच में आपने मुझे बड़ा बनाया। खेल में मेरी सिफत नहीं हो सकती है, तो हे धनी आपकी सिफत कैसे करूं?

जा न्हाए अकल हिन आलम में, सा डिंनिएं मूके मत।
जे से आंऊं सभ समझी, कायम आलम सिफत।। ९ ।।

जो बुद्धि इस संसार में नहीं है, वह जागृत बुद्धि आपने मुझे दी। उसी से मैंने अखण्ड परमधाम की और संसार की सारी हकीकत को जाना।

गाल आंजी जाणूं असीं, जे डिंन्यूं असां के इलम।
कांध हित न भेंणी कुछण, गाल्यूं घरे थींद्यूं खसम।। १० ।।

आपने जागृत बुद्धि का ज्ञान दिया, तो उससे मैं अब आपकी बातों को जानती हूं। अब, हे धनी! यहां बोलने के लिए कुछ रहा ही नहीं। अब जो भी बातें हैं वह घर में होंगी।

Nijanand App

महामत चोए मूं धणी, मूंके वडी डेखारई रांद।
कर मूंसे मिठ्यूं गालियूं, मूंजा मिठडा मियां कांध।। ११ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मेरे धनी! आपने मुझे बहुत बड़ा खेल दिखाया। अब, हे मेरे रसिया! आप मेरे से रस भरी मीठी-मीठी बातें करो।

।। प्रकरण ।। १३ ।। चौपाई ।। ५२४ ।।

आगे के तीन प्रकरण सिन्धी के हिन्दुस्तानी में किए हैं।

आसिक के गुनाह

सुनो रुहें अर्स की, जो अपनी बीतक।
जो हमसे लटी भई, ऐसी करे न कोई मुतलक।। १ ।।

हे मेरी परमधाम की रूहो! सुनो, जो हम पर बीती है। जैसी उलटी बात हमसे हो गई है, ऐसी कोई नहीं करता।

कहूं तिनका बेवरा, सुनियो कानों दोए।
ए देख्या मैं सहूर कर, तुम भी सहूर कीजो सोए।। २ ।।

उनका विवरण बताती हूं। दोनों कानों से ध्यान से सुनना। मैंने विचार कर देखा है। तुम भी विचार करना।

पीछे जो दिल में आवे साथ के, आपन करेंगे सोए।
भूली रोवे तेहेकीक, गए हाथ पटकते रोए।। ३ ।।

पीछे जो सुन्दरसाथ के दिल में आएगी हम वही करेंगे। जिससे गलती होती है, वह निश्चित ही हाथ पटक कर रोता है।

तिस वास्ते क्यों भूलिए, हाथ आए अवसर।
जो पीछे जाए पछतावना, क्यों आगे देख न चलें नजर।। ४ ।।

इस वास्ते अब सुन्दर अवसर जो हाथ में आया है उसमें गलती न करें। पहले से ही सावधान होकर आगे देख कर चलो, ताकि पीछे पछताना न पड़े।

अपनी गिरो आसिक, कहावत हैं मिने इन।
चलना देख के केहेत हों, ए अकल दई तुमें किन।। ५ ।।

हम रूहें इस संसार में धनी की आशिक कहलाती हैं। मैं यहां का चलना (व्यवहार) देखकर कहती हूं। तुमको यह अक्ल किसने दी?

लेनी हकीकत हक की, और देनी इन लोकन।
आसिक को ए उलटी, जो करत हैं आपन।। ६ ।।

श्री राजजी महाराज की हकीकत को लेकर संसार के लोगों को बताना आशिक का काम नहीं है, जो हम कर रहे हैं।

Nijanand App